Subject- Maithili (IInd semester)

Paper code- CC-6, MTL-522

Topic - Haatheek Daant

Format - PDF

Name/contact- Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mobile - 9661819662
email- ~~drsudhir85k~~
drsudhirkrisha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

हाथीक दाँत

'हाथीक दाँत' एकांकी एक उच्चकोटिक सामाजिक सुधारवादी रचना अछि। एहि मे एकांकीकार प्रो. प्रबोध नारायण सिंह साम्प्रतिक भारतीय समाज मे व्याप्त छल-प्रपंच, द्वेष, स्वार्थ-लोलुपता आदिक वर्णन कएलनि अछि। प्रस्तुत एकांकी मे हुनका हम एक यथार्थवादी कलाकार रूपेँ देखैत छी। समाजक भ्रष्ट वर्गक लोकक अमानवीय आचरणक वर्णन कए ओ अपन प्रगतिवादी एवं सुधारवादी प्रवृत्तिक परिचय देलनि अछि। नेताजी आ बिजली समाजक भ्रष्ट वर्गक प्रतीक छथि। नेताजी धन-धान्य सँ भरल-पुरल लोक छथि। बिजली सेहो ताही वर्गक नारी छथिन। हुनका दुनू जोटे कैं कोनहुँ प्रकारक कष्ट वा चिन्ता नहि छनि। दुनू जोटा एकटा महिला आश्रमक संचालन कए रहल छथि। परंच हुनक बाह्य आ अभ्यंतर मे पूर्ण असामंजस्य अछि। वचन सँ तँ ओ बड़ शुद्ध आ पवित्र देखि पड़ै छथि परन्तु हुनक मन आ कर्म दुनू कैं देखि कए आश्चर्य होइत अछि। नेताजी अपना कैं सत्यवादी आ सत्यनिष्ठ सिद्ध करबाक लेल कोन-कोन स्वांग नहि रचै छथि जखन कि सत्य ई अछि जे असत्ये हुनक धन छनि।

ई प्रवृत्ति आजुक सब नेता मे देखब। मुदा हुनक क्रियाक अध्ययन कएला सँ सत्य प्रगट भए जाइत अछि। ओ अपन स्वार्थक सिद्धि हेतु की-की नहि करै छथि। अनर्गल मार्ग सँ धनक संग्रह करब, अपन प्रशंसा अपनहि शब्दैं करब, ग़रीब लोकनि कैं तंग करब, सदिखन व्यभिचारहि मे लुटल रहब, व्यभिचारक विरोध केनिहार कैं प्रपंचपूर्ण मार्ग सँ दंड देब, इएह हुनका लोकनिक चरित्रगत विशेषता अछि। भ्रष्ट आचरणक ओ सभ सुशीला नारीक सतीत्वक नाश करए मे कनेको भयभीत नहि होइत छथि। विधिक दंडक भय सेहो हुनका सब कैं नहि होइत छनि। चोरबजारी आ कालाबजारीक विरुद्ध आंदोलन केनिहार ओलोकनि स्वयं उक्त काज सब मे दिन-राति लागल रहैत छथि। ओलोकनि समाज मे सदिखन इएह प्रचार करैत रहैत छथि जे नारीक सम्मान होअए, नारीक मर्यादाक रक्षा होअए, परंच स्वयं नारीक मान लुटैत छथि, स्त्रीक मर्यादाक हनन करैत छथि। नारी कैं ओलोकनि विलासिताक साधनहि मात्र बुझै छथि।

नारीक रक्षा लेल आश्रमक निर्माण हेतु जनता सँ अनुरोध केनिहार नेताजी नारीक सतीत्व पर आक्रमण करैत छथि। मिथिलाक उद्धार लए संकल्प लेनिहार नेता कैं एहि प्रकारक अनुचित काज नहि करबाक चाही। मुदा हम देखैत छी जे एहि तरहक अनुचित काज अधिकांश नेता करै छथि। स्वार्थान्ध हुनका लोकनि कैं उचित आ अनुचित मे किछु अन्तरे नहि बुझि पड़ैत छनि।

एकांकीकार आदर्श पुरुष छथि। हुनक आदर्शवादी विचार सँ बोध लए हमरा लोकनि कैं समाजक पवित्रताक नाश केनिहार विकृति सभकैं

Scanned with CamScanner

दूर करबाक चाही। साम्प्रतिक भारतीय समाजक उन्नयन हेतु दुष्ट आ दुराचारी लोकक तिरस्कार आवश्यक अछि।

नेताजीक चरित्र-चित्रण

नेताजी साम्प्रतिक नेता वर्गक प्रतिनिधित्व करैत देखाओल गेल छथि। हुनक बोली, चालि-ढालि, क्रिया-कलाप आदि मे एखुनका भारतीय नेता सभक भ्रष्ट नीति एवं आचरणक झलक भेटैत अछि। हुनक सबटा कार्य हुनक वचनक विपरीत होइत अछि। हुनक वाह्य आ अभ्यंतर दुनू मे कोनो सामंजस्य नहि। वचन मे तँ ओ पवित्र छथि परंच हुनक करनी पूर्णतः अमानवीय अछि। अपन दोष केँ गुप्त राखए लेल ओ एक धार्मिक संस्थानक निर्माण करबैत छथि। जनताक सम्मुख उपस्थित भए ओ अपन ओजस्वी भाषण मे मिथ्या धार्मिकताक परिचय दैत छथि। सत्यक चोला पहिरि ओ असत्यक पोषण करैत छथि। छल प्रेरिता हुनक वाणी कतेक प्रभावशालिनी अछि, सम्मोहित करबाक शक्ति ओकरा मे कतेक छैक से द्रष्टव्य अछि - "आसानी सँ कोनो काज नहि होइत छैक। महिलाश्रमक आगाँ वाला जमीन लेबए लेल जे हम आमरण अनशन कयलहुँ ताहि मे पचीसे दिनक बाद करोड़ीमल केँ झूकए पड़लनि। सत्यक सदा जीत होइत छैक। हमर समाज सत्यहि पर टिकल अछि। तेँ हम कहैत छी जे हमरा लोकनिक जीवन मे मिथ्या कथमपि नहि आबय। आडम्बर एवं छल-प्रपंच सँ सय योजन दूर रहबाक चाही। देखू ने, आइ सर्वत्र सिफारिश आओर घुसखोरीक बाजार गर्म अछि। परमिट आओर कोटाक खुलेआम बिक्री होइत अछि। छोट सँ पैघ सब अफसर घूस लैत अछि। नेते सब केँ देखियनु ने जनता सँ चन्दा वसुलैत अछि आओर चन्दाक टाका कतए विला जाइत छैक से भगवानहि जानथि। कालाबाजारीक पाइ सँ व्यवसायी लोकनिक धोधि दिनोदिन नमरले जाइत छनि - आओर गरीब तथा मजदूर लोकनिक ऊपर अत्याचार सेहो बढ़ले जाइत छैक। (उच्च स्वर मे अधिक आवेश सँ) एहि बेइमान एवं प्रपंची सभक दले केँ दाबए पड़त। बापू, अत्याचारी सभक नाश हो।"

समाज केँ अपना दिस आकर्षित करब लेल नेताजी सत्यक प्रचार-प्रसार मे लागल रहैत छथि जखन कि सत्य ई अछि जे हुनक कोनो काज सत्य सँ विभूषित नहि अछि। हुनक कथनी आ करनी मे पर्याप्त अन्तर अछि जे हुनक व्यवसाय थिक तकरे ओ निन्दा करैत छथि। यद्यपि ओ स्वयं घूसखोर छथि, घूस लए अपन सन्दूक भरि लेलनि, तथापि अपना केँ समाज मे शुचि सिद्ध करबाक लेल ओ घूसखोरी केँ नष्ट करब लेल लोक केँ प्रेरित करैत छथि। चोरी डकैती आदि सनक अमानवीय काज केँ प्रोत्साहन देब, बेइमान आ छल-प्रपंची लोकनिक संग देब, कालाबाजारीक व्यवसाय केँ प्रोन्नतिक दिशा प्रदान करब - इएह सब हुनक मुख्य काज थिक। ई प्रवृत्ति प्रायः सभ भारतीय नेता मे पाओल जाइत अछि। महिलाश्रमक नाम पर चन्दा वसूल कए अपन सन्दूक भरब, अपन भोग-विलासक हेतु अपेक्षित सामग्रीक संग्रह करब, ई सब हुनक चारित्रिक विशिष्टता थिक।

Scanned with CamScanner

नेताजी जनताक धन कैं लुटैत छथि। जे बिपली हुनक मनोरंजनक साधन छथिन, तनिको ओ ठकैत छथि। नोकरीक खोज मे एकटा शिक्षित युवक कैं देखि ओ अपन सन्दूक भरबाक प्रयत्न करैत छथि।

उच्च विचारक लोक सदिखन मानव-कल्याणहि कैं अपन जीवनक उद्देश्य बनाए चलैत अछि। जाहि काज सँ मनुष्यक अहित वा अमंगल होइत छैक ताहि दिस ओ कखनहुँ नहि प्रवृत्त होइत छथि। ठकी, घूसखोरी आदि सँ ओ सदा योजन दूर रहैत छथि। नेताजी अधम लोक छथि। ठकी, घूसखोरी, निर्धन जनता कैं सताएब आदि हुनक मुख्य व्यवसाय छिक।

नेताजी निकृष्ट कोटिक लोक छथि। हुनक चरित्र मे आजुक नेताक सभ दुर्गुण विद्यमान अछि। आजुक नेता सभ मिथ्याभाषी आ दुराचारी होइत छथि। निर्धन कैं प्रताड़ित करब, समाज मे अपना कैं श्रेष्ठ आ प्रतिष्ठित बनएबाक लेल भिन्न-भिन्न प्रकारक रूप धारण करब। कखनो सत्याग्रहीक, कखनो समाज सुधारकक, कखनो विशिष्ट दार्शनिकक, कखनो समाजसेवीक, आ कखनो वैराग्यीक तथा भारतीय संस्कृतिक वैशिष्ट्यक प्रशंसा करैत ओकर बुनियादी कैं नष्ट करब इएह सब काज सम्प्रति भारतक नेता सबहिक विशिष्टता अछि। नेताजी मे ई सब विद्यमान अछि। नेताजी उक्त सब काज विशेष रूचि सँ करैत छथि।

Scanned with CamScanner